Dr. Kumari Priyanka

History department

H.D Jain college, ara

Notes for PG 1, CC3, UNIT–1

Topic :–हर्ष का मूल्यांकन (An Estimate of Harsha)

हर्षवर्द्धन सातवीं शताब्दी की भारतीय राजनीति का श्रेष्ठतम नायक था। एक कुशल योद्धा, साम्राज्यनिर्माता, प्रशासक, लोक कल्याणकारी और विद्यानुरागी शासक के रूप में सभी उसकी प्रसंशा करते हैं। आर० एस० त्रिपाठी उसकी तुलना अशोक, समुद्रगुप्त एवं अकबर से करते हैं।' अनेक विद्वान उसे अंतिम हिंदू सम्राट एवं साम्राज्यनिर्माता मानते हैं। इसके विपरीत डॉ रमेशचंद्र मजुमदार, डॉ० देवहुति इत्यादि उसे 'महान' शासक भी नहीं मानते, अंतिम की तो बात ही अलग है। यह सत्य है कि हर्ष में समुद्रगुप्त जैसी सैनिक प्रतिभा नहीं थी। हर्ष के पश्चात भी ललितादित्य, यशोवर्मन, पाल और प्रतिहार, चंदेल और कलचुरि राजाओं, राष्ट्रकूटों, चालुक्यों और चोलों ने हर्ष से भी बड़े साम्राज्य की स्थापना की। इसलिए, प्रो मजुमदार ठीक ही लिखते हैं, "उसे भारत का तो क्या, उत्तरी भारत का भी अंतिम साम्राज्यनिर्माता मानना भारतीय इतिहास के साथ अन्याय करना है।" लोक कल्याणकारी शासक होते हुए भी हर्ष ने वैसी प्रशासनिक व्यवस्था कायम नहीं की, जो उसके साम्राज्य को स्थायित्व प्रदान कर सके। फलतः, 647 ई में उसकी मृत्यु के साथ ही उसका साम्राज्य नष्ट हो गया। अनेक गुणों के बावजूद, "हर्ष शांति के कार्यों में जितना महान था, उतना युद्ध के कार्यों में नहीं।" बाह धर्मसहिष्णु, लोक कल्याणकारी और विद्या प्रेमी शासक था; परंतु 'अंतिम साम्राज्यनिर्माता' और कुशल प्रशासक नहीं।

ह्वेनसांग का भारत-विवरण:–हर्षवर्द्धन के समय में विख्यात चीनी यात्री ह्वेनसांग भारत आया था। बौद्धधर्म के विषय में विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के उद्देश्य से 630 ई में वह भारत आया। भारत में वह करीब 644 ई तक रहा। इस अवधि में उसने भारत के प्रमुख नगरों, बौद्ध केंद्रों, स्तूपों और महाविहारों का भ्रमण किया। वह हर्षवर्द्धन से भी मिला। चीन लौटकर उसने पाश्चात्य संसार के लेख (शी-यू-की) नामक पुस्तक में तत्कालीन भारतीय राजनीति, समाज, धर्म, आर्थिक व्यवस्था, शिक्षा एवं साहित्य की प्रगति पर विस्तृत ढंग से लिखा। यद्यपि ह्वेनसांग या युवान-च्वांग का विवरण धार्मिक भावना से प्रभावित है, तथापि इससे उपर्युक्त विषयों पर महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।

राजनीतिक स्थिति - युवान च्वांग के अनुसार हर्ष समस्त उत्तरी भारत का स्वामी था। उसने सुदृढ़ प्रशासनिक व्यवस्था स्थापित की। राजा प्रजा के हित में शासन करता था। वह प्रशासन में गहरी दिलचस्पी लेता था। जनता पर कर का भार अधिक नहीं था। बेगारी की प्रथा नहीं थी। सभी व्यक्ति स्वतंत्रतापूर्वक एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा सकते थे। सरकारी अधिकारी जनता का शोषण नहीं करते थे। राजा

स्वयं ही भ्रमण कर (बरसात के दिनों को छोड़कर) प्रशासन का निरीक्षण करता था। राज्य में अपराध कम होते थे तथा अपराधियों को कठोर दंड दिया जाता था। यद्यपि मृत्युदंड नहीं दिया जाता था; परंतु गंभीर अपराधों के लिए अंग-भंग की सजा दी जाती थी। जनता की सुविधा के लिए सड़कों और सरायों का निर्माण करवाकर उनकी सुरक्षा की व्यवस्था की गई, फिर भी डाकू सड़कों पर यात्रियों को लूटते थे। हेनसांग स्वयं ही अनेक बार डाकुओं से अपने प्राणों की रक्षा बड़ी कठिनाई से कर सका।

सामाजिक दशा-सातवीं शताब्दी का भारतीय समाज वर्ण और जातिप्रथा के आधार पर संगठित था। चारों वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) में धार्मिक अनुष्ठानजनित पवित्रता थी। ब्राह्मण अपना अधिकांश समय धार्मिक कार्यों में व्यतीत करते थे। क्षत्रिय निर्दोष, सरल, पवित्र, सीधे-सादे और मितव्ययी थे। वे दयालु और परोपकारी थे। क्षत्रिय राजन्यवर्ग के थे, जो सदियों से शासन करते चले आ रहे थे। व्यापारी वैश्य जाति के थे। शूद्र शिल्प और भृति के अतिरिक्त कृषिकर्म भी करते थे। कुछ क्षेत्रों (सिंध) में शूद्र शासक भी होते थे। मतिपुर का राजा भी चीनी यात्री के अनुसार, शूद्र ही था। शूद्रों की अनेक उपजातियाँ भी थीं, जैसे निषाद, पार्श्व इत्यादि। अस्पृश्य (अंत्यज) जातियों का उल्लेख भी ह्वेनसांग करता है। ऐसी जातियों में चांडाल, मतप (मरे हुए, जानवरों को खानेवाला), श्वपाक (कुत्ते खानेवाला), कसाई, जल्लाद आदि प्रमुख है। अस्पृश्यता की भावना बलवती थी। चीनी यात्री का कथन है कि चांडाल, मेहतर आदि अछूत जातियाँ नगर के बाहर ऐसे मकानों में रहती थीं, जिन्हें विशेष चिन्ह में पहचाना जा सकता था। उनका स्पर्श और संसर्ग वर्जित था।विवाह सामान्यतः सजातीय होते थे। अंतर्जातीय विवाहों पर प्रतिबंध था, परंतु अनुलोम और प्रतिलोम विवाह भी होते थे। बहुविवाह, बालविवाह, सती प्रथा जैसी कुरीतियाँ समाज में व्याप्त थीं। उच्च वर्ग की स्त्रियाँ शिक्षा प्राप्त करती थीं। उनके बीच परदा-प्रथा नहीं थी। सिर्फ वैश्य और शूद्र स्त्रियाँ ही पुनर्विवाह करती थीं। विधवाएँ श्वेत वस्त्र धारण करती थीं। नगरों में वेश्याएँ (गणिकाएं) भी होती थीं। जनसाधारण का जीवन सादा और सात्त्विक था, परंतु नगरों और राजसभाओं में विलासिता थी। लोगों के वस्त्र सादे परंतु सुरुचिपूर्ण होते थे। सूती, रेशमी और ऊनी वस्त्रों का व्यवहार होता था। पुरुष टोपियाँ पहनते थे। दाँतों को काले या लाल रंग से रँगा जाता था। मांस, मदिरा, लहसुन, प्याज आदि का उपयोग बहुत कम होता था, परंतु क्षत्रिय एवं शूद्र मादक द्रव्यों का सेवन करते थे। दूध, घी, मक्खन, शक्कर, चावल, रोटी उनके मुख्य भोज्य पदार्थ थे। धनी वर्गवाले नगरों में भव्य भवनों में रहते थे, परंतु गरीबों के घर घास-फूस से बने रहते थे। स्त्री-पुरुष आभूषण पहनते थे, परंतु पैरों में चप्पल पहनने का रिवाज बहुत कम था। स्वच्छता और पवित्रता पर बल दिया जाता था। खाने के पूर्व हाथ-मुँह धोना आवश्यक था। खाने के बाद दातुन से मुँह धोया जाता था। भारतीय बासी या जूठा भोजन नहीं करते थे। वे सुगंधित इत्र का व्यवहार करते थे। पुत्र की उत्पत्ति पर उत्सव मनाए जाते थे। शतरंज, पासा खेलना तथा नाटक देखना मनोरंजन के मुख्य साधन थे। मृतकों को शवदाह, जल-विलयन और खुले छोड़ देने की प्रथा थी।ह्वेनसांग भारत के विभिन्न भागों के लोगों की चारित्रिक विशेषताओं के संबंध में भी लिखता है। उसके अनुसार काश्मीरनिवासी धोखेबाज और कायर थे। मथुरा विद्वता और नैतिक आचरण के लिए विख्यात था। थानेश्वर 'अभिचार-क्रिया' के लिए तथा कन्नौज 'परिष्कृत जीवन' के लिए प्रसिद्ध था। विद्वान एवं विनम्र स्वभाव के तथा मगधवासी विद्वानों का आदर करनेवाले थे। कामरूप के लोग ईमानदार, मगर उम्र

प्रवृत्ति के थे। उड़ीसा, आंध्र और धान्यकटकवाले भी उग्र स्वभाव के थे। महाराष्ट्री अभिमानी, परंतु पीड़ितों के सहायक तथा पुण्ड्रवर्धनवाले विद्वानों की कद्र करनेवाले थे।